तेरे मंदिरों मे अमृत बरसे माँ, तेरे मंदिरों मे अमृत बरसे माँ तेरे भक्तों के मन की प्यास बुझी, अब रू

तेरे मंदिरों मे अमृत बरसे माँ, तेरे मंदिरों मे अमृत बरसे माँ
तेरे भक्तों के मन की प्यास बुझी, अब रूह किसी की ना तरसे माँ

भक्ति के सागर मे भक्तो ने आज लगाये गोते
इस अमृत मे भीग के कागा, हंस है छिन मे होते
वो लोग बड़े ही बदकिस्मत, जो आज ना निकले घर से माँ

नाम के रस की इस धरा मे आत्मा जब है बहती
जग की नश्वर चीजों की फिर तलब उसे ना रहती
कहीं और यह मस्ती मिलती नहीं, जो मिलती है तेरे दर से माँ

इन छीटों से जन्म जन्म की मैल सभी धुल जाती
मिट जाता अन्धकार दिलों का आखे है खुल जातीं

Source: https://www.bharattemples.com/tere-mandiron-me-amrit-barse-maa/

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw